The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 1 | January 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

न्याय की अवधारणा: रॉल्स बनाम उपयोगितावाद

रवि वर्मा
(शोधार्थी), राजनीति विज्ञान विभाग, किसान पी.जी. कॉलेज बहराइच (स्वायत्तशासी)
डॉ. अम्बुज मिश्रा (सहायक आचार्य)
राजनीति विज्ञान विभाग, किसान पी.जी. कॉलेज बहराइच (स्वायत्तशासी)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18648469

1. प्रस्तावना (Introduction)

न्याय की अवधारणा मानव समाज, राजनीतिक दर्शन और नैतिक चिंतन का एक केंद्रीय विषय रही है। इतिहास के हर दौर में यह प्रश्न उठता रहा है कि समाज में संसाधनों, अवसरों और स्वतंत्रताओं का वितरण किस प्रकार होना चाहिए और किस सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए। आधुनिक राजनीतिक दर्शन में न्याय के दो प्रमुख दृष्टिकोण–जॉन रॉल्स का "निष्पक्षता के रूप में न्याय" (Justice as Fairness) और उपयोगितावाद का "अधिकतम समष्टि-सुख सिद्धांत" (Greatest Happiness Principle)–न्याय के स्वरूप को समझने के दो विशिष्ट तथा प्रभावशाली ढाँचे प्रस्तुत करते हैं। रॉल्स व्यक्तिगत अधिकारों, समान स्वतंत्रताओं और असमानता को न्यूनतम करने के सिद्धांत पर बल देते हैं, जबकि उपयोगितावाद समाज के कुल सुख को अधिकतम करने को न्याय का आधार मानता है।

इन दोनों सिद्धांतों के बीच अंतर केवल दर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आधुनिक लोकतंत्र, सार्वजनिक नीति, सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों और संसाधनों के न्यायसंगत वितरण के प्रश्नों को भी गहराई से प्रभावित करता है। इसलिए, रॉल्स और उपयोगितावाद की तुलनात्मक समीक्षा न केवल सैद्धांतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि समकालीन समाज में न्याय-आधारित निर्णय-निर्माण की प्रक्रियाओं को समझने के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य दोनों सिद्धांतों के मूल तत्वों, नैतिक आधारों, व्यावहारिक प्रभावों और आलोचनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है, ताकि न्याय की अवधारणा को एक व्यापक और संतुलित परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके।

2. न्याय की अवधारणा का विकास (Evolution of the Concept of Justice)

न्याय की अवधारणा मानव सभ्यता के साथ-साथ विकसित होती रही है। प्राचीन काल में न्याय का अर्थ मुख्यतः व्यवस्था और धर्म से जुड़ा था—जैसे प्लेटो के आदर्श राज्य में न्याय का अर्थ था हर व्यक्ति का अपने स्वभाव के अनुसार अपना कार्य करना। लेकिन आधुनिक युग में न्याय का अर्थ अधिकारों, स्वतंत्रताओं और समानता से जुड़ गया।

आधुनिक राजनीतिक दर्शन में न्याय को नई दिशा देने वाले विचारकों में से एक थे जॉन स्टुअर्ट मिल, जिन्होंने उपयोगितावाद को नैतिक सिद्धांत के रूप में विकसित किया। उनके अनुसार न्याय वही है जो अधिकतम लोगों के सुख को बढ़ाए (Mill, 2004, pp. 6-14)। मिल ने “न्याय” को “उपयोगिता” के अधीन रखा, जो आधुनिक कल्याणकारी राज्य की नीति निर्माण में लंबे समय तक प्रभावी रहा।

इसके विपरीत, 20वीं सदी के उत्तरार्ध में जॉन रॉल्स ने न्याय को एक बिल्कुल नई अवधारणा दी— "निष्पक्षता के रूप में न्याय"। रॉल्स ने यह तर्क दिया कि न्याय केवल परिणामों पर आधारित नहीं हो सकता, बल्कि उसे ऐसे सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए जिन्हें कोई भी व्यक्ति “अज्ञान के आवरण” के पीछे रहकर निष्पक्ष रूप से स्वीकार करे (Rawls, 1999, pp. 15-22)। उनका दावा था कि न्याय का उद्देश्य समाज के सबसे कमज़ोर वर्ग की सुरक्षा और बुनियादी स्वतंत्रताओं की गारंटी करना है (Rawls, 2001, pp. 42-45)।

बाद में अमर्त्य सेन ने रॉल्स और उपयोगितावाद दोनों की आलोचना करते हुए न्याय का क्षमता-आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनके अनुसार न्याय का वास्तविक मूल्यांकन इस बात से होना चाहिए कि लोग क्या करने और क्या बनने में सक्षम हैं (Sen, 1992, pp. 45-59)। सेन का यह सिद्धांत न्याय की अवधारणा को हक़ीक़त से जोड़ते हुए एक व्यावहारिक दिशा प्रदान करता है।

इस प्रकार, न्याय की अवधारणा प्राचीन “कर्तव्य-आधारित” व्याख्याओं से लेकर आधुनिक “अधिकतम सुख”, “निष्पक्षता”, और “क्षमता” जैसे विविध ढाँचों में विकसित होती रही है। यह विकास यह दर्शाता है कि न्याय स्थिर सिद्धांत नहीं है, बल्कि समाज की बदलती परिस्थितियों और मूल्यों के साथ निरंतर रूप से पुनर्परिभाषित होता है।

3. रॉल्स का न्याय सिद्धांत (Rawls' Theory of Justice)

जॉन रॉल्स आधुनिक राजनीतिक दर्शन के सबसे प्रभावशाली विचारकों में से एक माने जाते हैं। उन्होंने 20वीं सदी में न्याय की अवधारणा को एक नया ढाँचा प्रदान किया, जिसे उन्होंने "निष्पक्षता के रूप में न्याय (Justice as Fairness)" नाम दिया। उनका मानना था कि किसी भी समाज का मूल उद्देश्य ऐसे न्यायपूर्ण सिद्धांतों को स्थापित करना होना चाहिए, जो सभी व्यक्तियों के लिए निष्पक्ष हों (Rawls, 1999, pp. 3-5)।

3.1 मूल स्थिति (Original Position)

रॉल्स का सबसे महत्वपूर्ण योगदान "मूल स्थिति" का विचार है। यह एक कल्पित परिस्थिति है जिसमें व्यक्ति अपनी सामाजिक पहचान, जाति, धर्म, आर्थिक स्थिति, प्रतिभा, लिंग आदि सभी व्यक्तिगत जानकारी से अनजान होते हैं। इस स्थिति में कोई भी व्यक्ति यह नहीं जानता कि वास्तविक समाज में उसकी क्या भूमिका होगी। इसका उद्देश्य न्याय सिद्धांतों को पूरी तरह निष्पक्ष बनाना है (Rawls, 1999, pp. 15-19)।

3.2 अज्ञान का आवरण (Veil of Ignorance)

मूल स्थिति को प्रभावी बनाने के लिए रॉल्स ने "अज्ञान का आवरण" प्रस्तुत किया। यह आवरण व्यक्तियों को अपने स्वार्थ पर आधारित निर्णय लेने से रोकता है और उन्हें ऐसे सिद्धांतों का चुनाव करने के लिए बाध्य करता है जो किसी भी व्यक्ति के लिए अन्यायपूर्ण न हों (Rawls, 1999, pp. 20-22)। इस प्रक्रिया से वही सिद्धांत चुने जाते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए सबसे सुरक्षित हों।

3.3 रॉल्स के दो न्याय सिद्धांत (Two Principles of Justice)

रॉल्स ने न्याय के दो मुख्य सिद्धांत प्रस्तुत किए, जिनसे उनकी पूरी दार्शनिक संरचना निर्मित होती है:

(1) समान मूलभूत स्वतंत्रताओं का सिद्धांत

प्रत्येक व्यक्ति को समान बुनियादी स्वतंत्रताएँ मिलनी चाहिए—जैसे भाषण, अभिव्यक्ति, धार्मिक स्वतंत्रता, राजनीतिक भागीदारी आदि। इन स्वतंत्रताओं पर समझौता नहीं किया जा सकता (Rawls, 1999, pp. 53-60)

(2) सामाजिक और आर्थिक असमानताओं का सिद्धांत

यह सिद्धांत दो भागों में विभाजित है:

(a) समान अवसर का सिद्धांत (Fair Equality of Opportunity)

सामाजिक और आर्थिक अवसर सभी को समान रूप से उपलब्ध होने चाहिए (Rawls, 2001, pp. 42-43)।

(b) अंतर सिद्धांत (Difference Principle)

समाज में होने वाली असमानताएँ तभी उचित हैं जब वे सबसे कमज़ोर वर्ग (least advantaged) की स्थिति में सुधार करें (Rawls, 2001, pp. 43-45)।

इसी सिद्धांत के कारण रॉल्स के सिद्धांत को अधिक मानवीय और सामाजिक न्याय के अनुकूल माना जाता है।

3.4 निष्पक्षता के रूप में न्याय (Justice as Fairness)

रॉल्स का दावा है कि न्याय का सार निष्पक्षता में निहित है। न्यायपूर्ण समाज वही है जिसमें संस्थाएँ इस प्रकार बनाई गई हों कि वे किसी विशेष वर्ग, समूह या व्यक्ति के हितों को प्राथमिकता न दें। उनका यह विचार आधुनिक लोकतांत्रिक ढाँचों और संवैधानिक संरचनाओं पर गहरा प्रभाव डाल चुका है (Freeman, 2007, pp. 83-121)।

3.5 रॉल्स के सिद्धांत की आलोचनाएँ (Criticisms of Rawls)

रॉल्स के सिद्धांत की कई विद्वानों ने आलोचना भी की है। सबसे प्रमुख आलोचना रॉबर्ट नोज़िक ने की, जिन्होंने कहा कि रॉल्स की व्यवस्था अत्यधिक राज्य-हस्तक्षेप को बढ़ावा देती है और व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा संपत्ति अधिकारों का कमजोर करती है (Nozick, 1974, pp. 183-231)।

इसके अलावा, अमर्त्य सेन ने क्षमता-आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए कहा कि केवल वितरण से न्याय का निर्धारण संभव नहीं (Sen, 1992, pp. 45-59)।

4. उपयोगितावाद का न्याय सिद्धांत (Utilitarian Concept of Justice)

उपयोगितावाद आधुनिक नैतिक दर्शन और राजनीतिक सिद्धांत का एक अत्यंत प्रभावशाली दृष्टिकोण है, जिसका मुख्य उद्देश्य समाज में अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम सुख प्राप्त करना है। इस सिद्धांत का मूल विचार यह है कि किसी भी नीति, कानून या नैतिक निर्णय की न्यायसंगतता उसके परिणाम

(outcome) से तय होती है—न कि उसके पीछे छिपे इरादों या सिद्धांतों से। इसीलिए इसे परिणामवाद (consequentialism) का सबसे प्रमुख रूप माना जाता है।

4.1 उपयोगितावाद का परिचय (Introduction to Utilitarianism)

उपयोगितावाद की जड़ें 18वीं और 19वीं सदी के ब्रिटिश दार्शनिक विचार में मिलती हैं। इसका सबसे महत्वपूर्ण आधार यह वाक्य है:

"The greatest happiness of the greatest number."

अर्थात – वह कार्य न्यायसंगत है जो अधिकांश लोगों को अधिकतम सुख प्रदान करे (Bentham, 1988, pp. 24-31)।

4.2 बेंथम का उपयोगितावाद (Bentham's Classical Utilitarianism)

जेरेमी बेंथम ने उपयोगितावाद को विज्ञान की तरह प्रस्तुत किया। उन्होंने felicific calculus या सुख-कलन का सिद्धांत दिया, जिसमें सुख-दुःख को मापकर निर्णय लेने की प्रक्रिया समझाई गई।

बेंथम के अनुसार, न्याय का आधार सामूहिक सुख बढ़ाना होना चाहिए, भले ही कभी-कभी यह व्यक्तिगत अधिकारों के साथ समझौता करे (Bentham, 1988, pp. 24-55)।

उनका सिद्धांत पूरी तरह परिणाम आधारित था—जो समाजिक नीतियों में लागत-लाभ (cost-benefit) दृष्टिकोण के रूप में आज भी देखा जा सकता है।

4.3 मिल का उपयोगितावाद (Mill's Utilitarianism)

जॉन स्टुअर्ट मिल ने बेंथम के विचार को आगे बढ़ाते हुए उपयोगितावाद को अधिक मानवीय और परिष्कृत रूप दिया।

मिल का दावा था कि सभी सुख समान नहीं होते—कुछ उच्च (higher pleasures) होते हैं, जैसे शिक्षा, कला, नैतिक चिंतन; और कुछ निम्न (lower pleasures), जैसे भौतिक सुख।

इसीलिए उन्होंने उपयोगितावाद में गुणात्मक अंतर को शामिल किया (Mill, 2004, pp. 6-14)।

मिल के अनुसार न्याय वही है जो उच्चतर नैतिक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा दे।

4.4 सामाजिक कल्याण और उपयोगिता (Social Welfare and Utility)

उपयोगितावाद सामाजिक कल्याण की अवधारणा से निकटता से जुड़ा है। आधुनिक कल्याणकारी राज्य (welfare state) की अनेक नीतियाँ—जैसे कर व्यवस्था, सब्सिडी, स्वास्थ्य नीति—लाभ-हानि विश्लेषण पर आधारित होती हैं, जो उपयोगितावाद का प्रत्यक्ष प्रभाव है।

कई अर्थशास्त्रियों जैसे अमर्त्य सेन ने उपयोगितावादी तरीकों की व्याख्या सामाजिक कल्याण सिद्धांत में की है (Sen, 1992, pp. 45-59)।

4.5 उपयोगितावाद की आलोचनाएँ (Criticisms of Utilitarianism)

उपयोगितावाद पर कई दार्शनिकों ने गहरी आलोचनाएँ की हैं:

(1) अल्पसंख्यकों की उपेक्षा

यदि अधिकतर लोगों का सुख किसी छोटे समूह के अधिकारों का हनन करके बढ़े, तो उपयोगितावाद उसे भी उचित ठहरा सकता है।

इसी कारण यह व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करने में कमजोर माना जाता है।(Sandel, 2009, pp. 30-55)

(2) परिणाम-उन्मुखता की समस्य

उपयोगितावाद केवल परिणाम देखता है, इरादे या नैतिकता नहीं।

उदाहरण: यदि गलत साधन से प्राप्त परिणाम सुखद हो, तो उपयोगितावाद उसे भी न्यायसंगत कह सकता है।

(3) सुख का मापन संभव नहीं

बेंथम का "सुख-कलन" व्यावहारिक रूप से लागू करना कठिन है—क्योंकि सुख को मापना वैज्ञानिक रूप से लगभग असंभव है (Rosen, 2003, pp. 60-110)।

इस प्रकार, उपयोगितावाद समाजिक नीतियों, अर्थशास्त्रीय निर्णयों और कल्याण की परिभाषा को प्रभावित करने वाला अत्यंत शक्तिशाली सिद्धांत है—परंतु इसके साथ गंभीर नैतिक और व्यावहारिक चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं।

5. रॉल्स और उपयोगितावाद पर प्रमुख दार्शनिक आलोचनाएँ

राजनीतिक दर्शन में रॉल्स और उपयोगितावाद दोनों सिद्धांतों को विशाल प्रशंसा के साथ-साथ गहरी आलोचनाएँ भी मिली हैं। आलोचकों का मानना है कि दोनों के सिद्धांतों में ऐसे वैचारिक अंतराल हैं जो वास्तविक समाज की जटिलताओं को पूरी तरह नहीं पकड़ पाते।

5.1 रॉल्स की आलोचनाएँ

रॉल्स के "निष्पक्षता के रूप में न्याय" सिद्धांत पर कई विद्वानों ने प्रश्न उठाए हैं।

कम्युनिटेरियन दार्शनिक माइकल सैंडल का तर्क है कि रॉल्स का "मूल स्थिति" (Original Position) और "अज्ञान का आवरण" (Veil of Ignorance) वास्तविक सामाजिक संदर्भों से अत्यधिक अलगाववादी है और मनुष्य को एक अमूर्त, असामाजिक इकाई मानता है ([Sandel, 1982, Cambridge University Press, pp. 45-48])।

कुछ अर्थशास्त्री यह भी कहते हैं कि रॉल्स का अंतर-सिद्धांत (Difference Principle) आर्थिक दक्षता को नुकसान पहुँचा सकता है और समाज के उत्पादन-उन्मुख ढाँचे पर अप्रत्यक्ष दबाव डालता है ([Nozick, 1974, Basic Books, pp. 150-155])।

5.2 उपयोगितावाद की आलोचनाएँ

उपयोगितावाद के विरुद्ध एक प्रमुख आलोचना यह है कि यह व्यक्तिगत अधिकारों को पर्याप्त संरक्षण नहीं देता।

आलोचक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सामूहिक सुख के नाम पर किसी अल्पसंख्यक या व्यक्ति के हितों का "त्याग" भी उचित माना जा सकता है, जिससे न्याय का मूल उद्देश्य कमजोर पड़ जाता है। इस प्रकार की आलोचना सीधे तौर पर जॉन स्टुअर्ट मिल के सिद्धांतों पर की गई है ([Mill, 1863, Parker, Son, and Bourn, pp. 25-28])।

बर्नार्ड विलियम्स ने उपयोगितावाद को "नैतिक रूप से मांगपूर्ण" बताते हुए कहा कि यह व्यक्ति की निजी नैतिक पहचान और उसके मूल्यों को महत्व नहीं देता ([Williams, 1973, Cambridge University Press, pp. 97-101])।

5.3 समकालीन बहस का प्रभाव

इन आलोचनाओं के कारण आज न्याय की चर्चा नई दिशाओं में विकसित हो रही है—जैसे कि क्षमताओं का दृष्टिकोण (Amartya Sen & Martha Nussbaum) तथा समानता, गरिमा और बहुलवाद पर आधारित आधुनिक मॉडल।

इस प्रकार, पाँचवीं हेडिंग स्पष्ट करती है कि रॉल्स और उपयोगितावाद दोनों सिद्धांतों के भीतर ऐसी बुनियादी चुनौतियाँ हैं जो आगे की दार्शनिक बहस को और अधिक समृद्ध बनाती हैं।

6. समकालीन संदर्भ में न्याय की पुनर्व्याख्या

21वीं सदी में न्याय की अवधारणा पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बहुआयामी हो चुकी है। वैश्वीकरण, डिजिटल अधिकार, लैंगिक समानता, पर्यावरण न्याय, आर्थिक असमानता और मानवीय गरिमा जैसे मुद्दों ने आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत को नए प्रश्नों के सामने खड़ा किया है। रॉल्स और उपयोगितावाद दोनों सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं, लेकिन समकालीन बहसें उनसे आगे बढ़कर अधिक व्यापक न्याय-चर्चा की मांग करती हैं।

6.1 क्षमताओं का दृष्टिकोण (Capabilities Approach)

अमर्त्य सेन और मार्था नुसबाउम ने न्याय को “वास्तविक स्वतंत्रताओं” और “जीवन को जीने की क्षमता” के संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया है। यह दृष्टिकोण इस बात पर ज़ोर देता है कि केवल संसाधनों का वितरण ही पर्याप्त नहीं, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति उनका वास्तविक उपयोग कर सके।

सेन ने अपनी पुस्तक Development as Freedom में बताया कि न्याय का मूल्यांकन इस आधार पर होना चाहिए कि लोग वास्तव में क्या कर सकते हैं और क्या बन सकते हैं ([Sen, 1999, Oxford University Press, pp. 18-22])।

6.2 मानवीय गरिमा और समानता का परिप्रेक्ष्य

न्याय पर नवीन बहसें अब “मानवीय गरिमा”, “अस्मिता”, और “समान व्यवहार” को केंद्र में रखती हैं। आलोचकों का मानना है कि रॉल्स का सिद्धांत अधिकारों की सुरक्षा तो करता है, लेकिन पहचान-आधारित भेदभावों (जाति, लिंग, वर्ग, दिव्यांगता) के लिए पर्याप्त संवेदनशील ढाँचा प्रदान नहीं करता।

इसी प्रकार उपयोगितावाद को भी समानता और अल्पसंख्यकों के अधिकारों को संतुलित तरीके से समाहित करने में चुनौतियाँ आती हैं।

6.3 वैश्वीकरण और वैश्विक न्याय

आज न्याय केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी चर्चा का विषय है। वैश्विक आर्थिक असमानता, जलवायु परिवर्तन और विस्थापन जैसे मुद्दों ने वैश्विक न्याय (Global Justice) की अवधारणा को महत्वपूर्ण बना दिया है।

थॉमस पोग्गे ने वैश्विक संस्थागत व्यवस्थाओं की आलोचना करते हुए कहा है कि वर्तमान संरचनाएँ गरीब देशों में गरीबी और निर्भरता को और बढ़ाती हैं ([Pogge, 2002, Polity Press, pp. 35-39])।

6.4 डिजिटल युग और न्याय की नई चुनौतियाँ

टेक्नोलॉजी ने न्याय के क्षेत्र में एक नई बहस को जन्म दिया है—डेटा गोपनीयता, एल्गोरिदमिक भेदभाव, डिजिटल असमानता आदि।

समकालीन दार्शनिक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि डिजिटल अधिकार अब "नए मानवाधिकार" के रूप में उभर रहे हैं, और इनका संरक्षण न्याय की चर्चा का अनिवार्य हिस्सा बन चुका है।

7. निष्कर्ष

न्याय की अवधारणा मानव समाज के सबसे मौलिक और जटिल प्रश्नों में से एक है। रॉल्स और उपयोगितावाद – दोनों सिद्धांत न्याय को समझने के दो शक्तिशाली और प्रभावशाली ढाँचे प्रदान करते हैं। रॉल्स का "निष्पक्षता के रूप में न्याय" सिद्धांत आधुनिक उदारवादी राजनीतिक दर्शन को गहराई देता है और व्यक्तिगत अधिकारों, समान अवसरों तथा संस्थागत संरचनाओं की भूमिका पर विशेष बल देता है ([Rawls, 1971, Harvard University Press])। दूसरी ओर, उपयोगितावाद सामूहिक कल्याण और परिणाम-आधारित नैतिकता के आधार पर न्याय को परिभाषित करता है, जैसा कि जे. एस. मिल ने अपने विश्लेषण में प्रस्तुत किया है ([Mill, 1863, Parker, Son, and Bourn])।

दोनों विचारधाराओं के बीच मूलभूत अंतर और पारस्परिक विरोधों ने न्याय की बहस को और अधिक समृद्ध बनाया है। रॉल्स की ओर से यह आशंका व्यक्त की गई है कि उपयोगितावाद व्यक्तिगत अधिकारों का पर्याप्त संरक्षण नहीं करता, जबकि उपयोगितावादी दृष्टिकोण से रॉल्स का "मूल स्थिति" मॉडल यथार्थवादी परिस्थितियों की पूरी झलक नहीं देता।

इसी प्रकार, आलोचकों जैसे माइकल सैंडल और बर्नार्ड विलियम्स ने यह प्रश्न उठाया है कि क्या ये सिद्धांत मानवीय अनुभवों और सामाजिक विविधताओं को पूरी तरह प्रतिबिंबित कर पाते हैं ([Sandel, 1982, Cambridge University Press], [Williams, 1973, Cambridge University Press])।

समकालीन दौर में न्याय की चर्चा रॉल्स और उपयोगितावाद से आगे बढ़कर क्षमताओं के दृष्टिकोण, वैश्विक न्याय, डिजिटल अधिकारों और पहचान-आधारित असमानताओं जैसे मुद्दों पर भी केंद्रित हो गई है। अमर्त्य सेन का तर्क है कि न्याय को समझने के लिए हमें यह देखना चाहिए कि लोग वास्तव में क्या करने और बनने में सक्षम हैं([Sen, 1999, Oxford University Press])।

अंततः कहा जा सकता है कि न्याय की कोई एकल परिभाषा पर्याप्त नहीं है। रॉल्स और उपयोगितावाद दोनों सिद्धांत मिलकर इस बहस को विविध आयाम देते हैं—रॉल्स समानता और नैतिक अधिकारों को सामने लाते हैं, जबकि उपयोगितावाद सामूहिक सुख और परिणामों की नैतिकता पर प्रकाश डालता है।इन दोनों दृष्टिकोणों को समझना आधुनिक समाजों की नीतियों, कानूनों और नैतिक ढाँचों के निर्माण के लिए अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि इन्हीं के आधार पर हम अधिक समान, संवेदनशील और न्यायपूर्ण समाज की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

सन्दर्भ सूची -

- रॉल्स, जॉन. (1971). A Theory of Justice. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 3-5।
- (न्याय को “निष्पक्षता के रूप में न्याय” के रूप में प्रस्तुत करने वाला प्रमुख व्याख्यान।)
- मिल, जॉन स्टुअर्ट. (1863). Utilitarianism. पार्कर, सन एंड बॉर्न। पृष्ठ 10-12, 25-28।
- (उपयोगितावाद का शास्त्रीय प्रतिपादन देने वाला मूल ग्रंथ।)
- सैंडल, माइकल. (1982). Liberalism and the Limits of Justice. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 45-48।
- (रॉल्स के “अज्ञान के आवरण” और “मूल स्थिति” मॉडल पर प्रमुख आलोचना।)
- नोज़िक, रॉबर्ट. (1974). Anarchy, State, and Utopia. बेसिक बुक्स। पृष्ठ 150-155।
- (अंतर-सिद्धांत और उदारवादी न्याय दृष्टिकोण पर रॉल्स की दार्शनिक आलोचना।)
- विलियम्स, बर्नार्ड. (1973). Utilitarianism: For and Against. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 97-101।
- (उपयोगितावाद पर नैतिक पहचान और नैतिक दायित्वों से जुड़ी प्रसिद्ध आलोचना।)

- सेन, अमर्त्य. (1999). Development as Freedom. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 18-22।
- (क्षमताओं के दृष्टिकोण की आधारभूत अवधारणा का विस्तार।)
- पोग्गे, थॉमस. (2002). World Poverty and Human Rights. पॉलिटी प्रेस। पृष्ठ 35-39।
- (वैश्विक न्याय, गरीबी और वैश्विक संस्थागत संरचनाओं पर आधुनिक विश्लेषण।)